कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मेव

विश्वविद्यालय स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाश में नहाया कुलपति सचिवालय व प्रशासनिक भवन

प्रिय किसान भाइयों एवं बहनों,

नव वर्ष 2024 की आप सभी को हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं। वर्ष 2023 आप सभी के सकारात्मक सोच, भागीदारी एवं प्रोत्साहन से उपलब्धियों से भरपूर रहा।

कृषि हमारे समाज का अत्यन्त महत्वपूर्ण तंत्र है। यह हमारे जीवन का आधार है, हमारे अन्न की आपूर्ति करता है, और समृद्धि का स्रोत है। इस क्षेत्र की मजबूती हम सभी की समृद्धि की राह प्रशस्त करती है।

विश्वविद्यालय पर हमने ना केवल शैक्षिक स्तर पर बल्कि कृषि तकनीकी, नवाचारों और सबसे महत्वपूर्ण रूप से किसानों के लिए सर्वोच्च सेवाएं प्रदान करने का संकल्प लिया है। हमारे यहां कृषि क्षेत्र में नए-नए तकनीकों, विज्ञान और तत्वों का अध्ययन किया जाता है ताकि हम अपने किसानों को उन्नत और सुगम तरीके से कृषि करने के लिए सक्षम बना सकें। साथ ही कृषि में नवाचारों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों जैसे नवाचारी कृषक वैज्ञानिक संवाद, कृषि चौपाल, किसान मेले, प्रदर्शनियां, कृषि हाट का आयोजन आदि। इसी के साथ विश्वविद्यालय ने माननीय राज्यपाल महोदय एवं कुलाधिपति श्रीमान् कलराज मिश्र जी द्वारा प्रदत्त निर्देशन, गांव गोद कार्यक्रम के अन्तर्गत 'कावनी' गांव में उल्लेखनीय कार्यों को वर्ष पर्यन्त चलाया एवं ग्रामीण समुदाय में नवीन चेतना, जागरूकता, विश्वास एवं परिवर्तन को प्रत्यक्ष होते देखा है। विश्वविद्यालय के माननीय राज्यपाल महोदय का दो बार आगमन हमारे प्रयासों को संबल प्रदान करने को इंगित करता है। इनके सशक्त एवं सकारात्मक दूरदर्शिता को हमारे विश्वविद्यालय को गत वर्ष लाभ मिला एवं हमारे प्रयासों को उत्साह मिला है। वर्ष 2019 में उनके द्वारा स्वामी विवेकानन्द कृषि संग्रहालय का लोकार्पण किया गया, जिसमें वर्षभर आगंतुकों ने भ्रमण कर सभी पहलुओं पर विस्तार से जानकारी प्राप्त कर लाभ उठाया। वर्ष 2023 हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की पहल पर 'अन्तरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष' के रूप में मनाया गया। इसके तहत विश्वविद्यालय द्वारा अनेक पहल किये गए जिसमें सबसे बड़ा सफलतम आयोजन तीन दिवसीय किसान मेला 'पोषक अनाज – समृद्ध किसान' रहा तथा तकरीबन सात हजार किसानों एवं अन्य प्रतिभागियों ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया। एक अन्य अभूतपूर्व उपलब्धि इस क्षेत्र में हमारे वैज्ञानिकों को जर्मनी के संघीय गणराज्य द्वारा उनके तैयार बाजरा बिस्कुट की सामग्री पर पेटेंट के रूप में प्राप्त हुई।

विश्वविद्यालय में कृषि विज्ञान में नवाचार का समर्थन किया जाता है। हम नवीनतम तकनीकों, कृषि उत्पादन में सुधार, और अनुसंधान के माध्यम से कृषि क्षेत्र में सुधार लाने के लिए प्रतिबद्ध है। यहाँ पर कृषि से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में हमें उत्कृष्टता प्राप्त है। हमने सुनियोजित खेती, पानी की बचत तकनीक और फसल सुरक्षा में वृद्धि के लिए कई पहलुओं में नवाचार किया है। ये सभी उपलब्धियां हमारे विश्वविद्यालय के विकास और सशक्तिकरण के साक्षात्कार हैं। हम सभी का लक्ष्य है कि हम अगले दिनों में भी और अधिक उत्कृष्टता की ऊँचाइयों को छू सके और समाज में अधिक उत्कृष्टता और समृद्धि को साधने का काम कर सकें।

नव वर्ष की मंगलकामना

नमस्कार।

डॉ. अरुण कुमार

कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

जनवरी/ JANUARY

पौष–माघ वि.सं. 2080
Pausa-Magha V.S. 2080

पौष–माघ शाके 1945
Pausa-Magha Saka 1945

अवकाश
17 गुरुगोबिन्द सिंह जयन्ती
26 गणतन्त्र दिवस

* ऐच्छिक अवकाश
01 क्रिश्चियन नव वर्ष दिवस
06 श्री पार्श्वनाथ जयन्ती
13 लोहड़ी पर्व

@ दिनांक 30 जनवरी को पूर्वाह्न 11 बजे 2 मिनिट मौन रखें।

रविवार Sunday	१० 31	१७ 7 11	२४ 14 3-4	माघ १ 21 11	८ 28 3
सोमवार Monday	* पौष ११ 1 पौष कृष्ण 5	१८ 8 12	२५ 15 5	२ 22 12	९ 29 4
मंगलवार Tuesday	१२ 2 6	१९ 9 प्र. 13	२६ 16 6	३ 23 प्र. 13	@ १० 30 4
बुधवार Wednesday	१३ 3 7	२० 10 14	२७ 17 7	४ 24 14	११ 31 5
गुरुवार Thursday	१४ 4 8	२१ 11 अमावस्या	२८ 18 8	५ 25 पूर्णिमा	१२ 1
शुक्रवार Friday	१५ 5 9	२२ 12 पौष शुक्ल 1	२९ 19 9	६ 26 माघ कृष्ण 1	१३ 2
शनिवार Saturday	* १६ 6 10	* २३ 13 2	३० 20 10	७ 27 2	१४ 3

महत्वपूर्ण दूरभाष

कुलपति सचिवालय	0151-2250443	vcrau@raubikaner.org
	0151-2250488 (O)	
	0151-2250336 (Fax)	
कुलसचिव	0151-2250025	reg@raubikaner.org
वित्त नियंत्रक	0151-2250564	compt@raubikaner.org
भू सम्पदा अधिकारी	0151-2250484	eoff@raubikaner.org

जनवरी माह के कृषि कार्य

गेहूँ :

- पछेती बोई गई गेहूँ की फसल में प्रथम सिंचाई बुवाई के 20–25 दिन बाद शीर्ष जड़ जमने के समय करनी चाहिए तथा समय पर बोई गई गेहूँ की फसल में दूसरी सिंचाई बुवाई के 40–45 दिन बाद (फूटान के समय पर) करें।
- फसल में नत्रजन की आधी मात्रा 15 किलो प्रति बीघा यानि 33 किलो यूरिया प्रति बीघा निराई–गुडाई करके पहली सिंचाई के तुरन्त बाद टॉप ड्रेसिंग द्वारा देवें।
- खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरापाइरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 से 3 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस एल) 300 मिलीमीटर प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई पानी के साथ देवें।
- प्रथम सिंचाई के बाद जब फसल 30–35 दिन की जाये तो खरपतवार नियंत्रण हेतु 4 ग्राम मेट सल्फुरॉन मिथाइल या 500 ग्राम 2, 4–डी एस्टर साल्ट प्रति है. की दर से दें।

चना :

- सिंचित चने की फसल में जहां दो सिंचाईयां उपलब्ध हो वहां दूसरी सिंचाई बुवाई के 100 दिन बाद (फली आने की अवस्था पर) देनी चाहिए।
- बारानी चने में बुवाई के 30 दिन बाद निराई–गुडाई शुरु कर देवें तथा 50–60 दिन तक जब तक खरपतवार हो तब तक करते रहें।
- फली छेदक की निगरानी हेतु 4 फेरोमोन ट्रेप प्रति हैक्टर लगायें। हरी लट का प्रकोप दिखाई देने पर 1.5 प्रतिशत क्यूनालफॉस या फेनवलरेट 0.4 प्रतिशत पाऊडर का भुरकाव 20–25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से करना चाहिए।
- खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरापाइरीफास 20 ई.सी. की 4 लीटर मात्रा प्रति हैक्टर सिंचाई पानी के साथ दें।

सरसों :

- देरी से बोई गई सरसों में सफेद रोली रोग के प्रकोप होने पर मैन्कोजेब या मेटालेक्सिल (रिडोमिल एम. जैड) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- जब न्यूनतम तापक्रम 4.0 डिग्री सैल्सियस तक पहुंच जाए व उत्तर दिशा से ठंडी हवा चलने लगे तथा आसमान साफ हो तो सरसों की फसल को पाले से नुकसान की आशंका हो जाती है। ऐसे समय में 1 एम. एल. व्यापारिक गंधक का तेजाब या डाईमिथाइल सल्फोऑक्साइड का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- चेपा का प्रकोप दिखाई देने पर मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या डाइमिथोएट 30 ई. सी का 1 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें या थायमिथोक्जाम 25 डब्ल्यु. जी. का 200 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
- तना गलन रोग (स्टेम रोट) की रोकथाम के लिए फसल की 50 दिन की अवस्था पर ट्राईकोडरमा मिश्रण (*ट्राईकाडरमा हेमेटम* एवं *ट्राईकोड्रमा विरीडी* व्यावसायिक जैविक उत्पाद) का 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से) घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सरसों में बुवाई के 80 से 85 दिन पर 1.75 ग्राम इन्डोल एसिटिक एसिड को 100 लीटर पानी में घोलकर प्रति बीघा की दर से छिड़काव करने से पैदावार में वृद्धि होती है।

किन्नों :

- फल तुड़ाई के बाद सूखी तथा रोग ग्रस्त शाखाओं या टहनियों की काट–छांट करें। काट–छांट के बाद 0.3 प्रतिशत कॉपर आक्सी क्लोराइड या बोर्डो मिश्रण (2:2:250) का छिड़काव करें।
- मुख्य तने व कटी टहनी पर बोर्डो पेस्ट (3:3:30) का लेप करें।
- लो टनल में सब्जियों को लगाए।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

कृषि पंचाग - 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

फरवरी / FEBRUARY

माघ–फाल्गुन वि.सं. 2080
Magha-Phalguna V.S. 2080

माघ–फाल्गुन शाके 1945
Magha-Phalguna Saka 1945

अवकाश
16 देवनारायण जयन्ती

ऐच्छिक अवकाश
22 विश्वकर्मा जयन्ती
23 स्वामी रामचरण जयन्ती
23 गाडगे महाराज जयन्ती
24 गुरु रविदास जयन्ती
25 शब–ए–बारात

रविवार Sunday	८ 28	4	11 2	18	✶ 25 फाल्गुन कृष्ण 1
सोमवार Monday	९ 29	5	12	19	26 2
मंगलवार Tuesday	30	१७ 6 11	२४ 13 4	फाल्गुन १ 20 11	२७ 27 ८
बुधवार Wednesday	११ 31	१८ 7 प्र. 12	२५ 14 5	२ 21 प्र. 12	९ 28 4
गुरुवार Thursday	माघ १२ 1 6	१९ 8 13	२६ 15 6	✶ ३ 22 13	१० 29 5
शुक्रवार Friday	१३ 2 7	२० 9 14–अमावस्या	२७ 16 7	✶ ४ 23 14	११ 1
शनिवार Saturday	१४ 3 8	२१ 10 माघ शु. 1	२८ 17 8	✶ ५ 24 पूर्णिमा	१२ 2

महत्वपूर्ण दूरभाष

प्रसार शिक्षा निदेशालय	0151-2251122	dee@raubikaner.org
कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र	0151-2250327	atic@raubikaner.org
भीमसेन चौधरी किसान घर	0151-2251065	dee@raubikaner.org

फरवरी माह के कृषि कार्य

गेहूँ :

- समय पर बोई गई फसल में तीसरी सिंचाई दूसरी सिंचाई के 25–30 दिन बाद (गांठ बनने की अवस्था पर) देवें तथा चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के 15–20 दिन बाद (बाली आने पर) देवें।
- पछेती बोई गई गेहूँ की फसल में दूसरी सिंचाई प्रथम सिंचाई के 25–30 दिन बाद (फूटान के समय) देवें।
- पछेती बोई गई गेहूँ में अगर आवश्यकता हो तो दूसरी सिंचाई के बाद बत्तर आने पर कसिये या हैंड हो से निराई–गुड़ाई करें।

चना:

- दूसरी सिंचाई बुवाई के 90–100 दिन बाद (फली आने पर) देवें।
- चने की हरी सुण्डी के प्रकोप से बचाने के लिए एन.पी.वी. का 112 लटों का समतुल्य प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें या नीम सीड करनैल एक्ट्रेक्ट 5 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- अधिक सर्दी पर पीले व गैरुंए पडे चने की फसल में एन.पी.के. विलयन के 1 प्रतिशत घोल का बारानी क्षेत्रों में फूल आने की अवस्था पर छिड़काव करने से चने की उपज में वृद्धि होती है।
- मृदा में जिंक की कमी होने पर या खड़ी फसल में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट एवं 0.25 प्रतिशत बुझा चूना के हिसाब से छिड़काव करें।
- चने की फसल में फली छेदक कीट के नियन्त्रण के लिए 50 प्रतिशत फूल बनते समय इण्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. की 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें तथा द्वितीय छिड़काव फलियों में दाने बनते समय क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18. 5 एस.सी. की 0.28 मिली मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सरसों :

- झुलसा रोग के भूरे गोल छल्लेदार धब्बे दिखाई पड़ने पर मैन्कोजेब (75 डब्ल्यू पी) या कॉपर आक्सीक्लोराइड का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 10–12 दिन बाद दोहराये।
- सरसों की फसल को पकाव के समय सूखे के प्रकोप से बचाने हेतु 100 लीटर पानी में 1 किलो पोटेशियम नाईट्रेट का घोल बनाकर फसल की फूल वाली अवस्था एवं फली वाली अवस्था पर एक–एक छिड़काव करें।

जौं :

- दूसरी सिंचाई बुवाई के 65–70 दिन बाद करें व तीसरी सिंचाई बुवाई के 100–110 दिन बाद करें।
- दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. का 2.5 से 3 लीटर या इमिडक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 300 मिली मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देवें।

गन्ना :

- जिस खेत में गन्ने की मोढी रखनी हो उस इकट्ठा कर जला देना चाहिए जिससे खेत में उपस्थित कीट आदि खत्म हो जाए तथा गन्ने की फुटान भी अच्छी हो।

किन्नो :

- गोंदाति रोग (गमोसिस) ग्रसित पौधों में मेटालक्सिल एवं मेनकोजेब (रिडोमिल गोल्ड) 25 ग्राम 40–45 लीटर पानी में घोलकर पौधों की जड़ों को भिगो देवें अथवा *ट्राईकोडरमा हरजैनियम* की पाउडर आधारित 60 ग्राम मात्रा प्रति पौधे के हिसाब से जड़ के चारों तरफ खुरपे से मिट्टी में मिला देवें उपचार 15 दिन के अंतराल पर दोहरावें। पिछले माह में यदि गोबर की खाद तथा पोटाश न डाल सकें हो तो इस माह के प्रथम सप्ताह तक अवश्य डालें।
- खजूर में परागण का कार्य करें।
- फलदार पौधे लगाने का कार्य करें।
- कुकुरबिट्स कुल की सब्जियां लगाएं।
- टमाटर, मिर्च, बैंगन की पौध तैयार करें व रोपित करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

मार्च / MARCH

फाल्गुन–चैत्र वि.सं. 2080
Phalguna-Chaitra V.S. 2080

फाल्गुन शाके 1945
Phalguna Saka 1945
चैत्र शाके 1946
Chaitra Saka 1946

अवकाश
08 महाशिवरात्रि
24 होलिका दहन
25 धूलण्डी
29 गुड फ्राइडे

★ ऐच्छिक अवकाश
05 महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती

रविवार Sunday	११ 31 6	१३ 3 7	२० 10 अमावस्या	२७ 17 8	४ 24 14
सोमवार Monday	७ 26	१४ 4 8	२१ 11 फाल्गुन शुक्ल 1	२८ 18 9	५ 25 पूर्णिमा
मंगलवार Tuesday	८ 27	★ १५ 5 9-10	२२ 12 2-3	२९ 19 10	६ 26 चैत्र कृष्ण 1
बुधवार Wednesday	९ 28	१६ 6 11	२३ 13 4	३० 20 11	७ 27 2
गुरुवार Thursday	१० 29	१७ 7 12	२४ 14 5	चैत्र शाके 1946 १ 21 12	८ 28 3
शुक्रवार Friday	फाल्गुन ११ 1 6	१८ 8 प्र. 13	२५ 15 6	२ 22 प्र. 13	९ 29 4
शनिवार Saturday	१२ 2 6	१९ 9 14	२६ 16 7	३ 23 13	१० 30 5

महत्वपूर्ण दूरभाष

कृषि विज्ञान केंद्र, बीकानेर	0151-2250944	kvkbikaner@gmail.com
कृषि विज्ञान केंद्र, लूणकरणसर, बीकानेर	9413123126	kvklunkaransar@gmail.com
कृषि विज्ञान केंद्र, पदमपुर, श्रीगंगानगर	9401912929	kvksgnr@gmail.com
कृषि विज्ञान केंद्र, जैसलमेर	02992-251359	kvkjaisalmer@gmail.com
कृषि विज्ञान केंद्र, पोकरण, जैसलमेर	02994-222316	kvkpokaran@gmail.com
कृषि विज्ञान केंद्र, चांदगोठी, चुरू	01559-227227	kvkchuru2@gmail.com
कृषि विज्ञान केंद्र, अबूसर, झुन्झुनू	01592-233420	kvkabusar@gmail-com

मार्च माह के कृषि कार्य

चना:

- चने की फलियों (घेघरियों/टाट) में हरी सूंडियों का प्रकोप अधिक होने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 250 मिली/बीघा या इण्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1.0 मिली या इमामेक्टिन बेनजोएट 0.5 ग्राम / लीटर या स्पाइनोसेड 45 एस.सी., 0.33 मिली या एसीफट (75 एसपी) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सरसों:

- इस माह में सरसों की फसल पर चैंपा (एफिड) का प्रकोप दिखाई देने पर थायमिथोक्जाम 25 डब्ल्यु जी का 100 ग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

गेहूँ:

- समय पर बुवाई की गई गेहूँ की फसल में चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के 15–20 दिन बाद (बाली आने पर) करें एवं पांचवीं सिंचाई चौथी सिंचाई के 15–20 दिन बाद (दूधिया अवस्था) पर देवें।
- पिछेती बोई गई गेहूँ की फसल में तीसरी सिंचाई दूसरी सिंचाई के 25–30 दिन बाद एवं चौथी सिंचाई तीसरी सिंचाई के 15–20 दिन बाद (बालियां आने पर) देवें।
- खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर क्लोरपाईरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 से 3 लीटर मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देवें।
- गेहूँ की फसल में बीज भराव व बीज निर्माण की अवस्था पर आकस्मिक तापमान वृद्धि से फसल बचाव के लिए सेलिसीलिक अम्ल 15 ग्राम (150 पी.पी.एम.) प्रति 100 लीटर पानी की दर से दो पर्णीय छिड़काव झण्डा पत्ती अवस्था व बीज की दुधिया अवस्था पर करें।

मूंग:

- बैशाखी मूंग की बुवाई का समय मार्च के प्रथम सप्ताह से अन्तिम सप्ताह तक है।
- बिजाई के लिए एस.एम.एल. 668, सत्या एवं आई.पी.एम. 02–3 किस्मों का प्रयोग करें। इसके लिए 4–5 किलो स्वस्थ प्रमाणित बीज प्रति बीघा पर्याप्त रहता है।
- उर्वरक : 5 किलो नत्रजन एवं 10 किलो फास्फोरस प्रति बीघा बुवाई से पूर्व ड्रिल करें।
- डाइक्लोरवॉस (डीडीवीपी) 76 प्रतिशत एस. एल. 5 मि.ली./लीटर के साथ क्यूनालफॉस (25 ईसी) 1.0 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से थ्रिप्स एवं फली बग का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

गन्ना:

- गन्ने की अच्छी फसल के लिए दोमट एवं अच्छे जल निकास वाली भूमि उपयुक्त रहती है। प्रथम जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करे, इसके बाद 2–3 जुताई हैरो/कल्टीवेटर से करके पाटा लगावें।
- 5–7 टन गोबर की खाद प्रति बीघा बुवाई के एक माह पूर्व खेत की तैयारी करते समय डालें। इसके बाद 37.5 किलो नत्रजन 10 किलो फास्फोरस व 10 किलो पोटाश प्रति बीघा दे। नत्रजन का 1/3 भाग (12.5 किलो) तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय कुड़ों में डालनी चाहिए।
- उन्नत किस्में : सी.ओ. 6617, सी.ओ.एस.. 95255 सी ओ.एच, सी. ओ. 05009 (करन–10) सी.ओ. 1253
- बीज की मात्रा – 15–20 क्विंटल प्रति बीघा (तीन आंख वाले लगभग 10,000 टुकड़े) पर्याप्त रहते हैं जितना हो सके गन्ने का ऊपरी 1/3 भाग ही बीज के काम लेवें।
- बोने के लिए चुने गये गन्ने के टुकड़ों को कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल से बीजोपचार करके बोना चाहिए।
- गन्ना 75 सेमी (ढाई फूट) की दूरी पर स्थित कतारों में सिरे से सिरा मिलाकर या आंख से आंख मिलाकर टुकड़ों को 12 सेमी गहरा बोये। शीघ्र अंकुरण के लिए 3–4 दिन के अन्तराल पर 3–4 बार सुहागा लगावे। बुवाई संभव हो तो 15 मार्च तक अवश्य कर लेनी चाहिए।

खजूर

- खजूर में परागण का कार्य करें। यह समय कृत्रिम परागण के लिए उपयुक्त होता है।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

अप्रेल / APRIL

चैत्र–वि.सं. 2080
Chaitra-V.S. 2080
चैत्र–वैशाख वि.सं. 2081
Chaitra-Vaisakha V.S. 2081

चैत्र–वैशाख शाके 1946
Chaitra-Vaisakha Saka 1946

अवकाश
10 चेटीचण्ड
11 ईदुलफितर (चाँद से)
11 महात्मा ज्योतिबा फुले जयन्ती
14 डॉ. अम्बेडकर जयन्ती
17 रामनवमी
21 श्री महावीर जयन्ती

★ ऐच्छिक अवकाश
05 जुमातुल विदा
13 वैशाखी

रविवार Sunday	११ 31	१८ 7 13-14	२५ 14 6	वैशाख १ 21 प्र. 13	८ 28 4
सोमवार Monday	चैत्र १२ 1 7	१९ 8 अमावस्या	२६ 15 7	२ 22 14	९ 29 5
मंगलवार Tuesday	१३ 2 8	२० 9 चैत्र शु. 1 वि.सं. 2081	२७ 16 8	३ 23 पूर्णिमा	१० 30 6-7
बुधवार Wednesday	१४ 3 9	२१ 10 2	२८ 17 9	४ 24 वैशाख कृष्ण 1	११ 1
गुरुवार Thursday	१५ 4 10	२२ 11 3	२९ 18 10	५ 25 1	१२ 2
शुक्रवार Friday	★ १६ 5 11	२३ 12 4	३० 19 11	६ 26 2	१३ 3
शनिवार Saturday	१७ 6 प्र. 12	★ २४ 13 5	३१ 20 12	७ 27 3	१४ 4

कृषि यंत्र एवं मशीनरी के परीक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए भ्रमण करें :

कृषि यंत्र एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केन्द्र
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर रोड़, बीछवाल, बीकानेर
खुलने का समय : – प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक

अप्रेल माह के कृषि कार्य

गेहूँ :

- फसल में लेट डफ स्टेज पर अन्तिम सिंचाई करें।
- रबी फसलों को कटाई के समय पके हुए खरपतवारों को बीज सहित ऐसे उखाड़े की बीज खेत में बिखर न पाए व उखाड़े गए खरपतवारों को एक गहरे गड्ढे में दबा दें।
- पिछेती फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर सिंचाई के पानी के साथ क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. की 2.5 से 3 लीटर का प्रयोग करें।

मूंग :

- जायद मूंग में बुवाई से 25–30 दिन बाद प्रथम सिंचाई करें।

देशी कपास :

- बिजाई का उपयुक्त समय अप्रैल के प्रथम सप्ताह से मई के प्रथम सप्ताह तक है।
- रबी फसल काटने के बाद खेत की गहरी जुताई कर देनी चाहिए जिसमें कीटों की निष्क्रिय अवस्थाओं को नष्ट किया जा सके।
- किस्में : आर.जी. 8, आर.जी. 18, एच.डी. 123 एवं आर. जी. 542 का प्रयोग करें।
- बीज की मात्रा : तीन किलो बीज प्रति बीघा प्रयोग करें।
- बुवाई : कतार से कतार की दूरी 67.5 सेमी, गहराई 4–5 सेमी।
- उर्वरक : कुल नत्रजन 22.5 किलो प्रति बीघा, नत्रजन की आधी मात्रा तथा 5 किलो फास्फोरस प्रति बीघा बुवाई के समय ड्रिल करें।
- बीज उपचार : बुवाई से पूर्व रोग ग्रस्त खेतों में 6 किग्रा जिंक सल्फेट (व्यापारिक ग्रेड) प्रति बीघा की दर से मिट्टी में मिलावें। कार्बेन्डाजिम (बॉविस्टीन) 0.2 या कारबोक्सीन (वीटावेक्स) 0.3 प्रतिशत (2 से 3 ग्राम एक लीटर में घोलकर) या सादे पानी में भिगाये गये बीजों को कुछ समय तक छाया में सुखाने के बाद *ट्राईकोडर्मा हरजिनियम* या *सूडोमोनास फ्लूओरेसेन्स* जैवक के पाउडर से 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- भूमि उपचार – जिन खेतों में जड़ गलन रोग का प्रकोप अधिक हो वहां *ट्राईकोडरमा हरजिनियम* 2.5 किग्रा नमी युक्त 50 किग्रा सड़ी गली गोबर की खाद में या वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर 15 दिन तक छाया में गीले कपड़े से ढककर रखें और बाद में रोग ग्रस्त खेत में तैयार करते समय प्रति बीघा की दर से मिट्टी में मिलाकर भूमि उपचार करें।

किन्नों :

- गमोसिस (फाइटोप्थोरा तना गलन) रोग से ग्रसित पौधों के उपचार हेतु रोगी डाल को खुरच कर साफ करें व रिडोमिल गोल्ड 20 ग्राम को 1 लीटर अलसी के तेल में घोल कर लेप करें।
- सिट्स सिल्ला, लीफ माइनर व थ्रिप्स से बचाव हेतु डाईफेन्थुरॉन (50 डब्ल्यू.पी.) 2 ग्राम, डाईमेथोएट (30 ई.सी.) 2 मिली., इमिडाक्लोरोप्रिड (200 एस.एल.) 0.5 मिली या थायमिथोग्जाम (25 डब्ल्यू. जी.) 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव आवश्यकता अनुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर दो बार करें।
- माह के अन्त या मई के प्रथम सप्ताह में सुक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करें।

गन्ना:

- फसल की कटाई के पश्चात फसल अवशेशों को इकट्ठा करके जला देना चाहिए जिससे कीटों की शुश्पत अवस्थाओं को समाप्त किया जा सके। गन्ने की फसल को जड़ एवं तना छेदक कीट से बचाने के लिए क्लोरोपाइरिफॉस (10 जी) कण 20 किलो प्रति हैक्टर की दर से गन्ने की बुवाई के 45 दिन बाद पौधों के साथ–साथ तथा 90 दिन बाद पौधों की वर्ल में डालें तथा पौधों के बीच सड़े व सुखे तने दिखाई देने पर उन्हें निकाल देवें।

कपास :

- जिन किसानों को आगामी ऋतु में कपास की फसल लेनी है। उन्हें खेत में गहरी जुताई कर देनी चाहिये जिससे कीटों की निष्क्रिय अवस्थाओं को नष्ट किया जा सके तथा कीट प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव भी कर लेना चाहिए।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

मई / MAY

वैशाख–ज्येष्ठ वि.सं. 2081
Vaisakha-Jyaistha V.S. 2081

अवकाश
10 परशुराम जयन्ती

वैशाख–ज्येष्ठ शाके 1946
Vaisakha-Jyaistha Saka 1946

✱ ऐच्छिक अवकाश
05 सैन जयन्ती
23 बुद्ध पूर्णिमा

रविवार Sunday	८ 28	✱ १५ 5 प्र. 12	२२ 12 5	२९ 19 11	५ 26 3
सोमवार Monday	९ 29	१६ 6 13	२३ 13 6	३० 20 प्र. 12	६ 27 4
मंगलवार Tuesday	१० 30	१७ 7 14	२४ 14 7	३१ 21 13	७ 28 5
बुधवार Wednesday	वैशाख ११ 1 8	१८ 8 अमावस्या	२५ 15 8	ज्येष्ठ १ 22 14	८ 29 6
गुरुवार Thursday	१२ 2 9	१९ 9 वैशाख शुक्ल 1-2	२६ 16 8	✱ २ 23 पूर्णिमा	९ 30 7
शुक्रवार Friday	१३ 3 10	२० 10 3	२७ 17 9	३ 24 ज्येष्ठ कृष्ण 1	१० 31 8
शनिवार Saturday	१४ 4 11	२१ 11 4	२८ 18 10	४ 25 2	११ 1

बाजरा एवं अन्य फसल उत्पाद के मूल्य संवर्धन की जानकारी के लिए भ्रमण करें:

बेकरी एवं उत्पादन ईकाई, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर रोड़, बीछवाल, बीकानेर
खुलने का समय :- प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक

मई माह के कृषि कार्य

नरमा, कपास, बीटी :

- अमेरिकन कपास नरमा की बिजाई पूरे माह में कर सकते हैं।
- नरमा कपास की बिजाई हेतु उन्नत किस्में आर.एस.टी. 9, आर. एस. 875, आर.एस. 810, आर. एस. 2013 एवं राज. एच. 16 (संकर) आदि के प्रमाणित बीज प्रयोग करें।
- बिजाई 67 x 30 सेमी. की दूरी पर करें।
- नरमा में नत्रजन 25 किलो एवं फास्फोरस 10 किलो प्रति बीघा काम में लेवें। पूरी फास्फोरस एवं 1/2 नत्रजन बुआई के समय ड्रिल करें।
- बीटी कपास की बुआई के लिए आर. एस. 2814, आर. एस.–2818, आर. एस.–2827, सीड 6588 बी.जी.–11, आर.सी.एच. 650, एम.आर.सी.एस.–6304 बी.जी.–11, एम.आर. सी.एच.–6025, जे.के.सी.एच.–1947, एन.ई. सी.एच.–6, एम.आर.सी.–7017 आदि किस्मों का प्रयोग करें।
- बीटी कपास के लिए बीज दर 450 ग्राम प्रति बीघा रखें।
- बीटी कपास की बुआई 108 सेमी x 60 सेमी पर करें।
- बीटी कपास के लिए नत्रजन 150 किलो, फास्फोरस 40 किलो एवं पोटाश 20 किलो / हैक्टर प्रयोग करें।
- बीटी कपास में नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई के साथ ड्रिल करें।
- देशी कपास में प्रथम सिंचाई बिजाई के 35–40 दिन बाद करें।

गन्ना :

- प्रथम सिंचाई 25–30 दिन बाद करें एवं शेष सिंचाईयां 10–15 दिन के अन्तराल पर लगावें।

अरहर :

- सिफारिश की गयी उन्नत किस्में – प्रभात, आई.सी.पी.एल. 87, आई.सी.पी.एल. 8803, पारस (एच.82–1)

मूंगफली :

- बिजाई का समय 15 मई से 15 जून तक है बिजाई के लिए उन्नत किस्में एच.एन.जी. 123, एच.एन.जी. 69, मल्लिका, एच.एन.जी., 10, एम. 13 एवं टी.जी. 37 ए का प्रमाणित बीज प्रयोग करें।
- कॉलर रोट व जड़ गलन रोग की रोकथाम हेतु बुवाई से 15 दिन पहले एक किलोग्राम *ट्राईकोड्रमा हरजेनियम* प्रति बीघा की दर से 12–15 किलो सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर खेत की तैयारी के समय देवें अथवा 2.5 किलोग्राम *ट्राईकोड्रमा विरिडी* प्रति बीघा की दर से 50 किलो सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर छाया में रखें एवं बुवाई के समय भूमि में मिलाएं तथा बीज को 10 ग्राम *ट्राईकोड्रमा विरिडी* या *ट्राईकोड्रमा हरजेनियम* प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें एवं *ट्राईकोड्रमा विरिडी* 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही मृदा निक्षेप (ड्रेचिंग) करें।
- फसल में कॉलर रोट (सन्धि विगलन) की रोकथाम के लिए फोलटॉल 2 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल (25 ई.सी.) 2 मिली अथवा टेबूकोनाजौल (2 डी.एस.) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचारित करें।
- मूंगफली की फसल में खरपतवार प्रबंधन हेतु ईमाजेथापर + पेण्डीमेथालिन (2+30% कम्पनी निर्मित) का 600 मिली / लीटर की दर से बीजाई के बाद 2–3 दिन में छिड़काव करें।

धान :

- नीरी (पोध) तैयार करने का समय मई का दूसरा पखवाड़ा है। एक बीघा रोपाई हेतु 100 वर्ग मीटर नर्सरी लगावें। इस क्यारी में 6 किलो बीज प्रयोग में लावें। क्यारी हमेशा तर रखें तथा पानी एक इंच से अधिक खड़ा तर रखें तथा पानी एक इंच से अधिक खड़ा न हो। आवश्यकता होने पर नर्सरी में 15 दिन बाद 2 किलो यूरिया ट्रॉप ड्रेसिंग करें।

किन्नों :

- बाग में फल गिरने से रोकथाम के लिये 1–1.5 ग्राम 2, 4–डी (हार्टीकल्चर ग्रेड), 100 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नया बगीचा लगाने के लिए गड्ढ़ो को खोदने का कार्य करें।
- बेर के पौधे में कटाई–छटाई (प्रुनिंग) का कार्य करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

जून / JUNE

ज्येष्ठ–आषाढ़ वि.सं. 2081
Jyaistha-Asadha V.S. 2081

ज्येष्ठ–आषाढ़ शाके 1946
Jyaistha-Asadha Saka 1946

अवकाश
09 महाराणा प्रताप जयन्ती
17 ईदुलजुहा

★ ऐच्छिक अवकाश

रविवार Sunday	९ 30 9	१२ 2 11	१९ 9 3	२६ 16 10	२ 23 2
सोमवार Monday	६ 27	१३ 3 12	२० 10 4	२७ 17 11	३ 24 3
मंगलवार Tuesday	७ 28	१४ 4 प्र. 13	२१ 11 5	२८ 18 11	४ 25 4
बुधवार Wednesday	८ 29	१५ 5 14	२२ 12 6	२९ 19 प्र. 12	५ 26 5
गुरुवार Thursday	९ 30	१६ 6 अमावस्या	२३ 13 7	३० 20 13	६ 27 6
शुक्रवार Friday	१० 31	१७ 7 ज्येष्ठ शुक्ल 1	२४ 14 8	३१ 21 14	७ 28 7
शनिवार Saturday	ज्येष्ठ ११ 1 9-10	१८ 8 2	२५ 15 9	आषाढ़ १ 22 पूर्णिमा–आषाढ़ कृ.1	८ 29 8

महत्वपूर्ण दूरभाष

मानव संसाधन विकास निदेशालय, बीकानेर	0151- 2250638	dhrd@raubikaner.org
प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय, बीकानेर	0151-2250562	dpm@raubikaner.org
छात्र कल्याण निदेशालय, बीकानेर	0151-2250926	dsw@raubikaner.org
अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन, बीकानेर	0151-2250561	dpg@raubikaner.org
भू स-श्यता एवं राजस्व सृजन निदेशालय, बीकानेर	0151-2110155	lscbikaner@gmail.com
परीक्षा नियंत्रक, बीकानेर	0151-2250463	
	0151-2250200	coe@raubikaner.org

जून माह के कृषि कार्य

किन्नों :

- किन्नू के बाग के पौधों को तेज गर्मी से बचाने के लिए पौधों के मुख्य तनें पर चूना तथा नीले थोथे का घोल (3:3:30) का लेप करें।

कपास/नरमा/बीटी:

- कपास में प्रथम सिंचाई 30–35 दिन बाद करें। नत्रजन की पूर्ति के लिए 27 किलो ग्राम यूरिया प्रति बीघा टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- प्रथम सिंचाई के बाद बत्तर आने पर निराई–गुड़ाई एवं विरलीकरण करें। पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी रखें तथा इससे अनावश्यक पौधों को उखाड़ देवें।
- देशी कपास में सिंचाई के बाद निराई गुडाई करें।
- देशी कपास में यदि पत्ती कुतरने वाले कीटों का प्रकोप दिखाई देवें तो मैलाथियान 5 प्रतिशत अथवा फेन्वेलरेट डस्ट 0.4 प्रतिशत में किसी एक का 5–6 किग्रा प्रति बीघा दर से भुरकाव करें।

गन्ना :

- फसल में 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा नत्रजन की पूर्ति के लिए 27 किलो यूरिया प्रति बीघा टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. 125 मिली मात्रा प्रति बीघा सिंचाई के साथ दें।

मूंगफली :

- सिफारिश की गई उन्नत किस्में एम 13, टी.जी. 37–ए, एच.एन.जी. 69, एच.एन. जी. 123 एवं मल्लिका का बीज प्रयोग करें।
- फसल में कॉलर रोट एवं जड़गलन की रोकथाम के लिए 10 ग्राम *ट्राईकोडरमा वायरेन्स* प्रति कि.ग्रा. बीज अथवा टेबूकोनाजोल (रेक्सील), 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार करें।
- मूंगफली की फसल में खरपतवार प्रबंधन हेतु ईमाजेथापायर + पेण्डीमेथालिन (2 + 30% कम्पनी निर्मित) का 600 मिली/लीटर की दर से बीजाई के बाद 2–3 दिन में छिड़काव करें।

धान :

- रोपाई हेतु जून का अन्तिम सप्ताह तथा जुलाई का प्रथम सप्ताह सर्वोत्तम रहता है। 25–30 दिन की पौध रोपाई हेतु अच्छी रहती है। रोपाई के बाद 15 दिनों तक खेत में 4–6 से.मी. पानी खड़ा रखें।
- रोपाई से पूर्व 10 किलो नत्रजन (22 किलो यूरिया) एवं 15 किलो फास्फोरस (94 किलो सिंगल सुपर फास्फेट) भूमि में डालें।
- खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्लोर 5 प्रतिशत (मचेटी) के दाने 7 किलो प्रति बीघा की दर से रोपाई के 2–3 दिन बाद छिड़काव देवें।

ग्वार :

- बिजाई का उत्तम समय मध्य जून से मध्य जुलाई माह है।
- ग्वार के लिए 4–5 किलो बीज प्रति बीघा की दर से प्रयोग करें। बिजाई के समय 11 किलो यूरिया तथा 62.5 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति बीघा के हिसाब से ड्रिल करें।
- नया बगीचा लगाने के लिए गड्ढ़ों को खोदने का कार्य करें व जून के अन्तिम सप्ताह में 20–25 किलो गोबर की खाद 1 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट व 100 ग्राम क्युनालफॉस प्रति गड्ढे में डालकर गड्ढों की भराई करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

जुलाई / JULY

आषाढ़–श्रावण वि.सं. 2081
Asadha-Sravana V.S. 2081

आषाढ़–श्रावण शाके 1946
Asadha-Sravana Saka 1946

अवकाश
17 मोहर्रम (ताजिया) चाँद से

★ ऐच्छिक अवकाश
21 गुरु पूर्णिमा

रविवार Sunday	९ 30	१६ 7 2	२३ 14 8	★ ३० 21 पूर्णिमा	६ 28 8
सोमवार Monday	आषाढ़ १० 1 10	१७ 8 3	२४ 15 9	३१ 22 श्रावण कृष्ण 1	७ 29 9
मंगलवार Tuesday	११ 2 11	१८ 9 3	२५ 16 10	श्रावण १ 23 2	८ 30 10
बुधवार Wednesday	१२ 3 प्र. 12	१९ 10 4	२६ 17 11	२ 24 3-4	९ 31 11
गुरुवार Thursday	१३ 4 13-14	२० 11 5	२७ 18 12	३ 25 5	१० 1
शुक्रवार Friday	१४ 5 अमावस्या	२१ 12 6	२८ 19 प्र. 13	४ 26 6	११ 2
शनिवार Saturday	१५ 6 आषाढ़ शुक्ल 1	२२ 13 7	२९ 20 14	५ 27 7	१२ 3

महत्वपूर्ण दूरभाष

केंद्रीय पुस्तकालय, बीकानेर	0151- 2251228	bikaner_center@rediffmail-com
सूचना प्रबंधन कंप्यूटर अनुप्रयोग केंद्र, बीकानेर	0151-2251083	cimca@raubikaner-org
केंद्रीय कार्यशाला, बीकानेर	0151-2250437	cpool@raubikaner-org
कृषि उपकरण एवं मशीनरी परीक्षण एवं प्रशिक्षण केंद्र, बीकानेर	0151-2250437	fimtcbkn@gmail-com
सुरक्षा अधिकारी, बीकानेर	9460067314	rkjakhar33@gmail.com

जुलाई माह के कृषि कार्य

खरीफ फसलें जैसे ग्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, तिल एवं अरण्ड की बिजाई जुलाई के प्रथम पखवाड़े में उत्तम रहती है।

इन फसलों की उन्नत एवं सिफारिश की गयी किस्में, बीज दर एवं उर्वरक इस प्रकार है :

फसल	ग्वार	बाजरा	मूंग	मोठ	तिल	अरण्ड
उन्नत किस्में	एच.जी. 2–20 आर.जी.सी. 1002 आर.जी.सी. 936 एच.जी. 365 आर.जी.सी. 986 आर.जी.सी. 1066 (लाठी) आर.जी.सी. 1033	एच.एच.बी. 67 राज. 171, पूसा 605 आई.सी.एम.एच. 356 एच.एच.बी. 67–2 आर.एच.बी.–121 आर.एच.बी.–177 एम.पी.एम.एच. 17	आई.पी.एम. 02–3 सत्या, एस.एम.एल. 668 गंगा–8, गंगा–1 के.–851 एम.एच. 421 एम.यू.एम.–2	आर.एम.ओ. 40 आर.एम.ओ. 257 आर.एम.ओ. 435 आर.एम.ओ. 2251	सी. 50 आर.टी. 46	गोच–1, गोच–4 आर.सी.एच. 1 ए.आर.सी.ए. 409
बीज दर	4–5 किलो / बीघा	1 किलो / बीघा	4–5 किलो / बीघा	2.5 किलो / बीघा	2.5 किलो / है. (शाखा वाली किस्में) 4–5 किलो / है. (शाखा रहित)	3–5 किलो / बीघा (75x30 सेमी)
उर्वरक / बीघा	5 किग्रा नत्रजन 8–10 किलो फास्फोरस	22 किलो नत्रजन 10 किलो फॉस्फोरस	5 किलो नत्रजन 10 किलो फास्फोरस	2.5 किलो नत्रजन 8 किलो फॉस्फोरस	10 किलो नत्रजन 8 किलो फास्फोरस	20 किलो नत्रजन व 10 किलो फास्फोरस

अमेरिकन कपास/नरमा/बीटी कपास :

- फसल की दूसरी सिंचाई के साथ शेष नत्रजन की मात्रा यूरिया के रूप में टॉप ड्रेसिंग कर दें। सिचांई के बाद बतर आने पर निराई–गुडाई करें व खरपतवार निकाल देवें।
- बीटी कपास में पोटेशियम नाईट्रेट दो प्रतिशत की दर से पर्णीय छिड़काव पुष्पन की चरम अवस्था पर करें।

गन्ना :

- फसल में जुलाई के अन्तिम सप्ताह में जड़ों के आस–पास मिट्टी चढ़ा देवें।

मूंगफली:

- फसल में प्रथम सिंचाई बुवाई के 25–30 दिन बाद करें। फसल में फूल आने से पूर्व निराई–गुडाई करें तथा फूल आने के बाद निराई गुड़ाई न करें।
- नये बगीचा लगाने के लिए पौध रोपण करें।
- अनार में मृग बहार लेने के लिए संतुलित खाद व उर्वरकों को देवें।
- बेर में पौधे तैयार करने हेतु देशी पौधे पर बंडिग करें।
- टमाटर, मिर्च, बैंगन, गोभी वर्गीय सब्जियों की पौध तैयार करें व तैयार पौध को खेत में रोपित करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

अगस्त / AUGUST

श्रावण–भाद्रपद वि.सं. 2081
Sravana-Bhadrapad V.S. 2081

श्रावण–भाद्रपद शाके 1946
Sravana-Bhadrapad Saka 1946

अवकाश
09 विश्व आदिवासी दिवस
15 स्वतंत्रता दिवस
19 रक्षाबंधन
26 श्री कृष्ण जन्माष्टमी

✱ ऐच्छिक अवकाश
25 थदड़ी

रविवार Sunday	६ 28	१३ 4 अमावस्या	२० 11 7	२७ 18 14	✱ ३ 25 7
सोमवार Monday	७ 29	१४ 5 श्रावण शुक्ल 1	२१ 12 7	२८ 19 पूर्णिमा	४ 26 8
मंगलवार Tuesday	८ 30	१५ 6 2	२२ 13 8	२९ 20 भाद्रपद कृ. 1	५ 27 9
बुधवार Wednesday	९ 31	१६ 7 3	२३ 14 9	३० 21 2	६ 28 10
गुरुवार Thursday	श्रावण १० 1 प्र. 12	१७ 8 4	२४ 15 10	३१ 22 3	७ 29 11
शुक्रवार Friday	११ 2 13	१८ 9 5	२५ 16 11	भाद्र १ 23 4	८ 30 12
शनिवार Saturday	१२ 3 14	१९ 10 6	२६ 17 प्र. 12-13	२ 24 5-6	९ 31 प्र. 13

खेती संबंधी जानकारी के लिए विश्वविद्यालय के निम्न मोबाइल एप एवं यू ट्यूब चैनल का उपयोग करें:

Kinnow Ganganagar
https://play.google.com/store/apps/details?id=ar.kinnowmandrine

Mustard Ganganagar
https://play.google.com/store/apps/details?id=mustard.ars.mustardganganagar

Wheat Ganganagar
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.wheat.arssgnr.wheatganganagar

Gram Ganganagar
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.arssgnr.gramganganagar

Cotton Ganganagar
https://play.google.com/store/apps/details?id=ars.cottonganganagar

अगस्त माह के कृषि कार्य

धान :

- धान की रोपाई के बाद खेत में 4–5 सेमी. पानी खड़ा रखें।
- रोपाई के 3–4 सप्ताह बाद खड़ी फसल में 22 किलो यूरिया प्रति बीघा टोप ड्रेसिंग करें।

अमेरिकन कपास/नरमा/ बीटी कपास:

- कपास की फसल में 20–25 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।
- इस माह में रस चूसक कीटों (हरा, तेला, सफेद मक्खी व थ्रिप्स) के प्रकोप की सम्भावना रहती है। अतः इन कीटों व पत्ती मरोड रोग के रोग वाहक कीट (सफेद मक्खी) के नियन्त्रण के लिए एसीटामिप्रिड 20 एस.पी. 0.4 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 178 एस.एल. 0.3 मि.ली. या थायोक्लोप्रिड 240 एस. सी. 1.0 मिली. या डाईफेन्थूरान 50 डब्ल्यू पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- चितकबरी लट के नियंत्रण के लिए 20 पौधों पर 20 लट दिखाई देने पर क्यूनालफॉस 25 ई. सी. 2.0 मि.ली. या थायोडिकार्ब (75 एस. पी.) 1.75 ग्राम या फ्लूबेन्डीयामाइड (480 एस. सी.) 0.4 मिली मात्रा का प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बीटी कपास में पोटेशियम नाइट्रेड दो प्रतिशत की दर से पर्णीय छिड़काव टिण्डे बनने की अवस्था पर करें।

मूंग:

- फसल 30 दिन की होने तक निराई–गुडाई अवश्य करें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए इमेजाथाइपर 10 प्रतिशत (एस.एल.) 10 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति बीघा की दर से 100 से 125 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करें।
- पीले मोजेक के विषाणुओं को फसल में फैलाने वाले तथा रस–चूसक कीटों की रोकथाम के लिए डाइमिथोऐट 30 ई.सी. 250 मिली प्रति बीघा कर दर से छिड़काव करें।

गन्ना :

- फसल में वर्षा न होने पर 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा जड़ों के आसपास मिट्टी चढा देवें।
- तना छेदक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर 10 जी फोरेट कण 4 किलो प्रति बीघा की दर से डालें। पाइरिला का प्रकोप होने पर मैलाथियान 50 ई.सी. 300 मिली या डाईमिथोएट 30 ई.सी. 250 मिली प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।
- दीमक का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 125 मिली अथवा क्लोरोपाईरीफॉस 20 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति बीघा की दर से सिंचाई के साथ देवें।

ग्वार :

- ग्वार की फसल में एक माह की अवस्था में निराई–गुडाई करें। खरपतवार नियंत्रण के लिए इमेजाथाइपर 10 प्रतिशत एस.एल. 10 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति बीघा की दर से 100 से 125 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करें।
- फसल में तेला (जोसिड) व सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर उनके नियंत्रण के लिए मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. 250 मिली प्रति बीघा की दर से प्रयोग करें।

किन्नू :

- सिट्रस कैंकर से बचाने के लिए 10–20 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 200 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड को 100 लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करें।
- फलों को गिरने से बचाने के लिए कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू. पी. (बाविस्टीन) 1 ग्राम प्रति लीटर या प्रोपीनेब 70 डब्ल्यू.पी. (एन्ट्राकोल) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ घोल कर छिड़काव करें। घोल में जिब्रेलिक एसिड 2.0 मिली / लीटर की दर से मिलावें।
- बाग में लीफ माइनर व नीम्बू तितली की लट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 2 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।
- बेर में देशी पौधों पर बंडिंग (चश्मा) चढाने का कार्य करें।
- फलदार पौधे लगाएं।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

सितम्बर / SEPTEMBER

भाद्रपद–आश्विन वि.सं. 2081
Bhadrapad- Asvina V.S. 2081

अवकाश
13 रामदेव जयन्ती, तेजा दशमी एवं खेजड़ली शहीद दिवस
16 बारावफात (चाँद से)

भाद्रपद–आश्विन शाके 1946
Bhadrapad- Asvina Saka 1946

* ऐच्छिक अवकाश
07 गणेश चतुर्थी
08 संवत्सरी
17 अनन्त चतुर्दशी

रविवार Sunday	भाद्र १० 1 14	* १७ 8 5	२४ 15 प्र. 12	३१ 22 5	७ 29 12
सोमवार Monday	११ 2 अमावस्या	१८ 9 6	२५ 16 13	आश्विन १ 23 6	८ 30 प्र. 13
मंगलवार Tuesday	१२ 3 अमावस्या	१९ 10 7	* २६ 17 14	२ 24 7	९ 1
बुधवार Wednesday	१३ 4 भाद्रपद शुक्ल 1	२० 11 8	२७ 18 पूर्णिमा–आश्विन कृ.1	३ 25 8	१० 2
गुरुवार Thursday	१४ 5 2	२१ 12 9	२८ 19 2	४ 26 9	११ 3
शुक्रवार Friday	१५ 6 3	२२ 13 10	२९ 20 3	५ 27 10	१२ 4
शनिवार Saturday	* १६ 7 4	२३ 14 11	३० 21 4	६ 28 11	१३ 5

खेती की नवीनतम तकनीक की जानकारी के लिए भ्रमण करें:

स्वामी विवेकानंद कृषि संग्रहालय
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर रोड़, बीछवाल, बीकानेर
खुलने का समय :- प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक

सितम्बर माह के कृषि कार्य

किन्नू :

- विदर टिप या डाई बैक रोग के लिये पौधे के रोगी भाग की कटाई छटाई करने के बाद 3 ग्राम कापर आक्सी क्लोराईड या मैनकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।
- फल गिरने से रोकने लिए 2.4–डी (हार्टीकल्चर ग्रेड) 1–1.5 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी का छिड़काव करें।

नरमा/बीटी/देशी कपास :

- इस माह में वर्षा न होने पर फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- इस माह में भी रस चूसक कीटों (हरा तेला, सफेद मक्खी व थ्रिप्स) व पत्ता मरोड रोग (लीफ कर्ल) के प्रकोप की सम्भावना बनी रहती है। अतः इन कीटों एवं पत्ती मरोड (लीफ कर्ल) के वाहक (सफेद मक्खी) के नियंत्रण के लिए थायमिथोक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. 0.5 ग्राम या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. 25 मिली या डाईफैंथूरान 50 डब्ल्यू पी. 2.0 ग्राम का प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नरमा व देशी कपास में चित्तकबरी, हरी व गुलाबी सूंडी के नियन्त्रण के लिए इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मिली या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 2.5 मिली या थायोडिकार्ब 75 एस.सी. 175 ग्राम या सातूपश्मेथिन 10 ई.सी. 10 मि.ली. या स्पाईनोसेड 45 एस.सी. 0.33 ग्राम में किसी एक का प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान :

- इस समय फसल में बालियां निकलने लगती हैं इसलिए पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करें।
- पिछेती बोई गई फसल में नत्रजन की तीसरी मात्रा 10 कि.ग्रा. प्रति बीघा (22 किलो यूरिया) के हिसाब से खड़ी फसल में देवें।
- फसल में ब्लास्ट (नदरा) रोग का प्रकोप दिखाई देने पर हिनोसान 0.5 प्रतिशत (150 ग्राम / 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर छिड़काव 15 दिन बाद दोहरावें।

गन्ना :

- वर्षा न होने पर फसल में 10–15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें।
- इस माह में फसल बढ़कर काफी बड़ी हो जाती है तथा सिंचाई व वर्षा होने की स्थिति में फसल आडी गिरने की सम्भावना रहती है। अतः फसल की बन्धाई 3–4 गन्ने के झुण्ड में पत्तियों से तिपाई के रूप में बांधकर रखें।
- तना छेदक कीट की रोकथाम के लिए फोरेट 10 जी कण 4 किलो प्रति बीघा कर दर से डाले।
- पाइरीला कीट के प्रकोप से बचने के लिए ऐपिरिकेमिया परजीवी को खेत में पनपाने के लिए 1500 कोकून प्रति बीघा की दर से पौधों की ऊपर पत्तियों के मध्य से या डाईमेथेएट 30 ई.सी. की 1.0 लीटर मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर ऐसीफेट 75 एस.पी. 200 ग्राम या इथियान 50 ई.सी. 250 मि.ली. का प्रति बीघा के हिसाब से छिड़काव करें।

मूंगफली :

- फसल में अन्तिम सिंचाई देवें।
- टिक्का रोग का प्रकोप दिखाई देने पर कार्बिन्डजिम 50 डब्ल्यू.पी. 0.1 प्रतिशत या मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत या हेक्जाकोनाजोल 5 मि.ली. ई.सी. 1.0 मि.ली. मात्रा का छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देने पर एवं दूसरा छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

ग्वार :

- फसल में इस माह वर्षा अभाव में एक सिंचाई अवश्य करें।
- इस माह में फसल पर हरे तेले के प्रकोप की सम्भावना होती है। इसके नियन्त्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. 250 मिली प्रति बीघा के हिसाब से छिड़काव करें।
- फसल में जड़गलन के निमन्त्रण के लिए कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर पौधों की जड़ों में डालें।
- बेक्टीरियल ब्लाईट (जीवाणु चित्ति) रोग का प्रकोप दिखाई देने पर 100 लीटर पानी में 10 ग्राम स्ट्रेप्टोसाईक्लिन व कॉपर आक्सीक्लोराइड (50 डब्ल्यू. पी.) 200 ग्राम का घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल में 2 छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी के नियन्त्रण हेतु ट्राइजोफॉरस 40 ई.सी. 250 मिली या कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 600 ग्राम का प्रति बीघा के हिसाब से छिड़काव करें।
- पत्तागोभी, फूलगोभी की तैयार पौध की रोपाई करें।
- बेर के बगीचों में हल्की सिंचाई करें एवं नत्रजन देवें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

अक्टूबर / OCTOBER

आश्विन–कार्तिक वि.सं. 2081
Asvina- Kartika V.S. 2081
अवकाश
02 महात्मा गांधी जयन्ती
03 नवरात्रा स्थापना एवं महाराजा अग्रसेन जयन्ती
11 दुर्गाष्टमी
12 विजय दशमी
31 दीपावली

आश्विन–कार्तिक शाके 1946
Asvina- Kartika Saka 1946
✱ ऐच्छिक अवकाश
11 महानवमी
20 करवाचौथ

रविवार Sunday	७ 29	१४ 6 3	२१ 13 10	✱ २८ 20 3-4	५ 27 11
सोमवार Monday	८ 30	१५ 7 4	२२ 14 11-12	२९ 21 5	६ 28 11
मंगलवार Tuesday	आश्विन ९ 1 14	१६ 8 5	२३ 15 प्र. 13	३० 22 6	७ 29 प्र. 12
बुधवार Wednesday	१० 2 अमावस्या	१७ 9 6	२४ 16 14	कार्तिक १ 23 7	८ 30 13
गुरुवार Thursday	११ 3 आश्विन शुक्ल 1	१८ 10 7	२५ 17 पूर्णिमा	२ 24 8	९ 31 14
शुक्रवार Friday	१२ 4 2	✱ १९ 11 8	२६ 18 कार्तिक कृष्ण 1	३ 25 9	१० 1
शनिवार Saturday	१३ 5 3	२० 12 9	२७ 19 2	४ 26 10	११ 2

महत्वपूर्ण दूरभाष

कृषि महाविद्यालय, बीकानेर	0151-2970282	coaraubikaner@gmail.com
कृषि महाविद्यालय, श्रीगंगानगर	0154-2440619	arssgnr2003@gmail.com
कृषि महाविद्यालय, मण्डावा, झुंझनू	9782815123	coamdw@raubikaner.org
कृषि महाविद्यालय, चांदगोठी (सादुलपुर) चूरू	9351218289	caacdg@raubikaner.org
कृषि महाविद्यालय, हनुमानगढ़	9828926284	coahmg@raubikaner.org
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	0151-2250692	chsc.bkn@gmail.com
कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान, बीकानेर	0151-2252981	director@iabmbikaner.org
कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान, श्रीगंगानगर	0154-2440619	arssgnr2003@gmail.com

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

सरसों :

- सरसों की बिजाई का उपयुक्त समय 5–6 अक्टूबर तक है। वैसे पूरे अक्टूबर माह में बुवाई कर सकते हैं।
- बिजाई के लिए उन्नत किस्में आर.जी.एन. 236, वरुणा (टी.59), पूसा बोल्ड, लक्ष्मी, आर. जी.एन. 13, आर.जी.एन. 73 एवं बारानी क्षेत्रों के लिए आर.एच. 761, आर. एच. 725, आर. जी. एन. 48, आर.जी.एन. 229 एवं आर.जी.एन. 298 का प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।
- बिजाई के लिए 600–700 ग्राम बीज प्रति बीघा प्रयोग में लें।
- बिजाई पूर्व 25 किग्रा यूरिया एवं 62.5 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट प्रति बीघा ड्रिल करें तथा प्रति बीघा 75 किग्रा जिप्सम का उपयोग बुवाई से पूर्व करने पर उपज में वृद्धि संभव है।
- फसल को सफेद रोली से बचाने के लिए मेटेलेक्सिल 2 ग्राम या एप्रोन 35 एस.डी. 6 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचार करें।

चना :

- चने की बिजाई का उत्तम समय 20 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक है।
- सिफारिश की गयी उन्नत किस्में इस प्रकार है : देशी किस्में – जी. एन.जी 2261, केशव, जी. एन.जी. 2144 (तीज), जी.एन.जी. 2171 (मीरा), जी.एन.जी. 663 (वरदान), जी.एन.जी. 469 (सम्राट), जी.एन.जी. 1581 (गणगौर), जी.एन. जी. 1958 (मरुधर) सी. 235।
- काबुली चना – जी.एन.जी. 1292, जी.एन.जी. 1499 (गौरी) एवं जी.एन.जी. 1969 (त्रिवेणी)।
- बिजाई हेतु 15 किलो बीज प्रति बीघा काम में लेवें। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. 469 (सम्राट) का बीज 25 किग्रा बीज प्रति बीघा काम में लेवें।
- जड़गलन व उखटा की रोकथाम के लिए बुवाई पूर्व बीज को 10 ग्राम *ट्राईकोडरमा हरजेनियन* (पाउडर आधारित) या 2 ग्राम कार्बेन्डेजिम (50 डब्ल्यू. पी.) प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें।
- चने की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु फसल बीजाई के बाद 3 दिन में 2.5 लीटर पेण्डीमेथालिन + इमेजाथापर (2 + 30% कम्पनी निर्मित) या पेण्डीमेथालिन (30 ईसी) का छिड़काव करें।
- दीमक की रोकथाम के लिए 400 मिली. क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. प्रति क्वि. बीज के हिसाब से बीज उपचार करें या 200 मिली. इमिडाक्लोपिड 17.8 एस.एल. या 250 ग्राम इमिडाक्लाप्रिड (600 एफ. एस.) को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर 100 किग्रा बीज के हिसाब से उपचारित करें।
- बिजाई के समय सिंचित क्षेत्रों में 11 किग्रा यूरिया एवं 62.5 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट प्रति बीघा ड्रिल करें। बारानी क्षेत्रों में नत्रजन की मात्रा आधी कर दें।

धान :

- खेत में मृदा पूर्णतया संतृप्त रहे इसके लिए समय समय पर सिंचाई करते रहें। कटाई से लगभग 15–20 दिन पूर्व सिंचाई रोक देनी चाहिए।

गन्ना:

- अक्टूबर माह के अन्त तक दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें।
- फसल में सफेद मक्खी के नियन्त्रण हेतु इथियान 50 ई.सी. 3.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

जौ :

- जौ की बिजाई का समय मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक है।
- बिजाई के लिए सिफारिश की गई किस्में – आर.डी. 2035, आर. डी. 2052, आर.डी. 2660, आर.डी. 2899, आर.डी. 2907, आर.डी. 2552, आर.डी. 2624 एवं आर.डी. 2592 का प्रमाणित बीज 25 किग्रा प्रति बीघा काम में लेवें।

किन्नू :

- पौधों पर आये हुए वाटर स्प्राउट (गुल्ला) काटे तथा कटे भाग पर बोर्डो पेंट (3 : 3 : 30) या कॉपर आक्सी क्लोराइड का लेप करें।
- किन्नों पौध प्रवर्धन हेतु चश्मा चढ़ाने का कार्य करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

नवम्बर / NOVEMBER

कार्तिक–मार्गशीर्ष वि.सं. 2081
Kartika-Margsirsh V.S. 2081

कार्तिक–मार्गशीर्ष शाके 1946
Kartika-Margsirsh Saka 1946

अवकाश

02 गोवर्धन पूजा
03 भाई दूज
15 गुरुनानक जयन्ती

✱ ऐच्छिक अवकाश

रविवार Sunday	५ 27	१२ 3 2	१९ 10 9	२६ 17 2	३ 24 9
सोमवार Monday	६ 28	१३ 4 3	२० 11 10	२७ 18 3	४ 25 10
मंगलवार Tuesday	७ 29	१४ 5 4	२१ 12 11	२८ 19 4	५ 26 11
बुधवार Wednesday	८ 30	१५ 6 5	२२ 13 प्र. 12	२९ 20 5	६ 27 12
गुरुवार Thursday	९ 31	१६ 7 6	२३ 14 13-14	३० 21 6	७ 28 प्र. 13
शुक्रवार Friday	कार्तिक १० 1 अमावस्या	१७ 8 7	२४ 15 पूर्णिमा	अग्रहायण १ 22 7	८ 29 13
शनिवार Saturday	११ 2 कार्तिक शु. 1	१८ 9 8	२५ 16 मार्गशीर्ष कृष्ण 1	२ 23 8	९ 30 14

महत्वपूर्ण दूरभाष

अनुसंधान निदेशालय, बीकानेर	0151-2250199	dor@raubikaner.org
कृषि अनुसंधान केंद्र, बीकानेर	0151-2250870	adrb@raubikaner.org
कृषि अनुसंधान केंद्र, श्रीगंगानगर	0154-2440619	arssgnr2003@gmail.com
कृषि अनुसंधान उप-केंद्र, हनुमानगढ़	01552-222935	arsshng@gmail.com
राष्ट्रीय बीज परियोजना, बीकानेर	0151-2251513	nspbikaner@gmail.com
यांत्रिक कृषि फार्म, रोजड़ी	01506-276137	nspbikaner@gmail.com
यांत्रिक कृषि फार्म, खारा	0151-2251513	nspbikaner@gmail.com

नवम्बर माह के कृषि कार्य

गेहूँ :

- गेहूँ की बिजाई का उपयुक्त समय 5 नवम्बर से 25 नवम्बर तक है एवं पिछेती बिजाई 25 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक कर सकते हैं।
- समय पर बिजाई के लिए उन्नत किस्में – पी. बी.डब्ल्यू–343, राज–3077, राज 1482, एच. डी. 2329, राज 4037, पी.बी. डब्ल्यू 502, पी. बी. डब्ल्यू 550, एच.डी. 2967, डी. बी. डब्ल्यू 17, डब्ल्यू एच 1105, डी.पी. डब्ल्यू 621–50, राज 3777, राज. 3765, डी. बी. डब्ल्यू 222, डी. बी. डब्ल्यू 187, डी.बी.डब्ल्यू. 303 एवं एच. डी. 3086 (पूसा गोमती) आदि है।
- बिजाई के लिए 25 किग्रा प्रमाणित बीज प्रति बीघा डालें।
- बिजाई के समय 24 किग्रा यूरिया एवं 22 किग्रा डी.ए.पी. व 10 किलो एम.ओ.पी. प्रति बीघा ड्रिल करें।
- जिंक की कमी वाले खेतों में 6 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति बीघा के हिसाब से जमीन में मिला देवें।
- गेहूँ में बीमारियों की रोकथाम हेतु 1.25 किग्रा *ट्राईकोडरमा हरजिनियम* को 25 किग्रा आद्रता युक्त गोबर की खाद में मिलाकर 10–15 दिन के लिए छाया में रख दें व इस मिश्रण को बुवाई के समय प्रति बीघा की दर से पलेवा करते समय मिट्टी में मिला देवें।

जौ:

- जौ की बिजाई के लिए उन्नत किस्में आर. डी. 2052, आर. डी. 2035, आर. डी. 2660, आर. डी. 2592, आर.डी. 2552, आर.डी. 2624 एवं आर. डी. 2508, आर.डी. 2708 आदि किस्मों का प्रमाणित बीज 25 किलो प्रति बीघा प्रयोग करें।
- फसल को आवृत कण्डवा से बचाने के लिए 2 ग्राम पारद फफूंदनाशी या 2.5 ग्राम मेन्कोजेब (75 डब्ल्यू.पी.) या 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। जहां अनावृत कण्डवा का प्रकोप हो, वहां 2 ग्राम कार्बोक्सिन (70 डब्ल्यू. पी.) से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- जौ की अच्छी पैदावार लेने हेतु 80 किग्रा. नत्रजन एवं 40 किग्रा. फास्फोरस प्रति हैक्टेयर दर से प्रयोग करें
- जौ की बिजाई से पूर्व दीमक प्रभावित क्षेत्र में 400 मिली क्लोरोपाइरिफॉस (20 ई.सी.) या 200 मिली इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.एल.) या 250 ग्राम इमिडाक्लोप्रिड (600 एफ.एस.) का 5 लीटर पानी के घोल बनाकर 100 किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें।

चना:

- चने की समय से बोई गई किस्मों की बिजाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह में पूरी कर लें।
- चने की फसल उगते समय या 10–15 दिन बाद हरी सूण्डी जैसी छोटी व मुलायम लट का आक्रमण हो जाता है इसके नियंत्रण के लिए क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण, 6 किग्रा बीघा के हिसाब से छिड़काव करें।

सरसों :

- सरसों की पिछेती बुवाई हेतु किस्म आर.जी. एन.–236 व आर.जी.एन. 145 को काम में लेवें।
- पिछेती बुवाई के लिए 25 किग्रा युरिया तथा 62.5 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति बीघा बुवाई पूर्व ड्रिल करें।
- फसल की प्रारम्भिक अवस्था पर पेन्टेड बग एवं अन्य पत्ते काटने वाले कीड़ों की रोकथाम के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 6 किलो प्रति बीघा की दर से भूरकाव करें।
- फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 21 से 30 दिन बाद (बढवार के समय) करें। सिंचाई से पूर्व अथवा बाद में एक या दो निराई–गुड़ाई आवश्यकतानुसार करें।
- प्रथम सिंचाई के समय 25 किलो यूरिया प्रति बीघा की दर से टोप ड्रेसिंग करें।
- खेत में 15–20 दिन बाद या प्रथम सिंचाई से पूर्व छंटाई करके पौधे से पौध की दूरी 15 सेमी. कर दें।
- सरसों में रासायनिक खरपतवार नियंत्रण हेतु फसल की बुवाई के तुरन्त बाद पेन्डामैथेलिन (38.7 सी.एस.) सक्रिय तत्व 750 मिली प्रति हैक्टर 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय

कृषि पंचाग – 2024

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

दिसम्बर / December

मार्गशीर्ष–पौष वि.सं. 2081
Margsirsh-Pausa V.S. 2081

अग्रहायण–पौष शाके 1946
Agrahayana-Pausa Saka 1946

अवकाश
25 क्रिसमस डे

★ ऐच्छिक अवकाश
25 श्री पार्श्वनाथ जयन्ती

रविवार Sunday	अग्रहायण १० **1** अमावस्या	१७ **8** 7	२४ **15** पूर्णिमा	पौष १ **22** 7	८ **29** 14
सोमवार Monday	११ **2** मार्गशीर्ष शुक्ल 1	१८ **9** 8-9	२५ **16** पौष कृष्ण 1	२ **23** 8	९ **30** अमावस्या
मंगलवार Tuesday	१२ **3** 2	१९ **10** 10	२६ **17** 2	३ **24** 9	१० **31** पौष शुक्ल 1
बुधवार Wednesday	१३ **4** 3	२० **11** 11	२७ ★ **18** 3	४ **25** 10	११ **1**
गुरुवार Thursday	१४ **5** 4	२१ **12** 12	२८ **19** 4	५ **26** 11	१२ **2**
शुक्रवार Friday	१५ **6** 5	२२ **13** प्र. 13	२९ **20** 5	६ **27** 12	१३ **3**
शनिवार Saturday	१६ **7** 6	२३ **14** 14	३० **21** 6	७ **28** प्र. 13	१४ **4**

दिसम्बर माह के कृषि कार्य

किन्नू:

- फसल चूसक पतंगा के नियंत्रण हेतु मैलाथियान (50 ई.सी.) की एक मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। शीरा या शक्कर 100 ग्राम को एक लीटर पानी में घोल लें। इसमें 10 मिली. मैलाथियान (50 ई.सी.) मिलाकर प्रलोभक तैयार करें। इस घोल की 100 मिली मात्रा प्यालों में डालकर कई स्थानों पर टांग दें।

गेहूँ:

- पिछेती बुवाई के लिए सिफारिश की गई किस्में डी.बी. डब्ल्यू. 171, राज–3777, राज–3765, पी.बी.डब्ल्यू–373 एवं डी.बी.डब्ल्यू–90 आदि का प्रमाणित बीज काम में लेवें।
- बिजाई के लिए 35 किलो प्रति बीघा बीज का प्रयोग करें तथा बुआई के समय 22 किलो डी. ए.पी. एवं 25 किलो यूरिया प्रति बीघा ड्रिल करें। देर से बोई गई फसल में नत्रजन दो बार ही देवें।
- समय पर बोई गई फसल में प्रथम सिंचाई 21–25 दिन बाद (शीर्ष जड़ जमने) पर करें तथा 30 किलो यूरिया प्रति बीघा टाप ड्रेसिंग करें।
- गेहूँ में तना गलन या जड़ गलन रोग की रोकथाम के लिए खड़ी फसल में प्रथम सिंचाई के समय कार्बेन्डेजिम 25 प्रतिशत मेन्कोजेब 50 प्रतिशत के मिश्रण की 250 ग्राम मात्रा प्रति बीघा पानी के साथ देवें।
- प्रथम सिंचाई के बाद जब फसल 30–35 दिन की हो जाये तो खरपतवार नियंत्रण हेतु 4 ग्राम मेटासल्पुरान मिथाइल या 500 ग्राम 2, 4–डी एस्टर साल्ट प्रति है. की दर से दें।

चना:

- चने में पहली सिंचाई बुवाई के 40–45 दिन बाद शाखा बनने के समय देवें।
- बारानी क्षेत्रों में बुआई के 5–6 सप्ताह बाद तक निराई–गुडाई अवश्य करें। सिंचित चने में सिंचाई के बाद बत्तर आने पर एक निराई–गुडाई करें।
- चने की देरी से बुआई हेतु उन्नत किस्में जी. एन.जी–2144 (तीज) व जी.एन.जी.–1488 (संगम) का 20 किग्रा प्रमाणित बीज प्रति बीघा की दर से काम में लेवें तथा बुआई दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लेवें।
- खड़ी फसल में दीमक की रोकथाम के लिए सिंचित क्षेत्रों में क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा प्रति बीघा सिंचाई पानी के साथ देवें।
- कटवर्म कीट की रोकथाम हेतु फेनवेलरेट 0.4 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मैलाथियान 5 प्रतिशत पाउडर में से किसी एक का 5–6 किलो प्रति बीघा की दर से भुरकाव करें।
- हरी सूण्डी के व्यस्कों/पतंगों का पता लगाने के लिए खेत में फेरोमोन ट्रेप ल्यूर सहित प्रति बीघा अवश्य लगाएं ताकि कीट का उचित समय पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सके।

जौ:

- जौ की फसल में बुआई के 25 से 30 दिन बाद पहली सिंचाई करें।
- फसल में सकरी पत्तीवाले व चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए आइसोप्रोट्यूरान (75 प्रतिशत डब्ल्यू. पी.), 500 ग्राम सक्रिय तत्व एवं 2, 4–डी (58 प्रतिशत डब्लू.एस.सी.) 250 ग्राम सक्रिय तत्व को 500 से 700 लीटर पानी में घोल बनाकर फ्लेट पैनी नोजल का प्रयोग करते हुए बुवाई के 30–35 दिन बाद छिड़काव करें। खरपतवारनाशी का छिड़काव फसल में सिफारिश की गयी अवधि के पूर्व अथवा पश्चात् किया जाए तो फसल को हानि पहुंचने की सम्भावना रहती है जो बाद में विकृत बालियों के रूप में प्रकट होती है।

सरसों :

- सरसों में दूसरी सिंचाई 45 दिन बाद एवं तीसरी सिंचाई 75 दिन बाद देवें।
- फसल बुवाई के 50 से 60 दिन बाद (15 दिसम्बर के बाद) सफेद रोली रोग के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। रोकथाम के लिए मेटालेक्सिल 4 प्रतिशत मेन्कोजेब 64 प्रतिशत 68 डब्ल्यू.पी. का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें व 15 दिन के अन्तर पर दूसरा छिड़काव करें।

प्रकाशन : प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन निदेशालय